अक्रम यूथ

मार्च २०१८ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹ २०

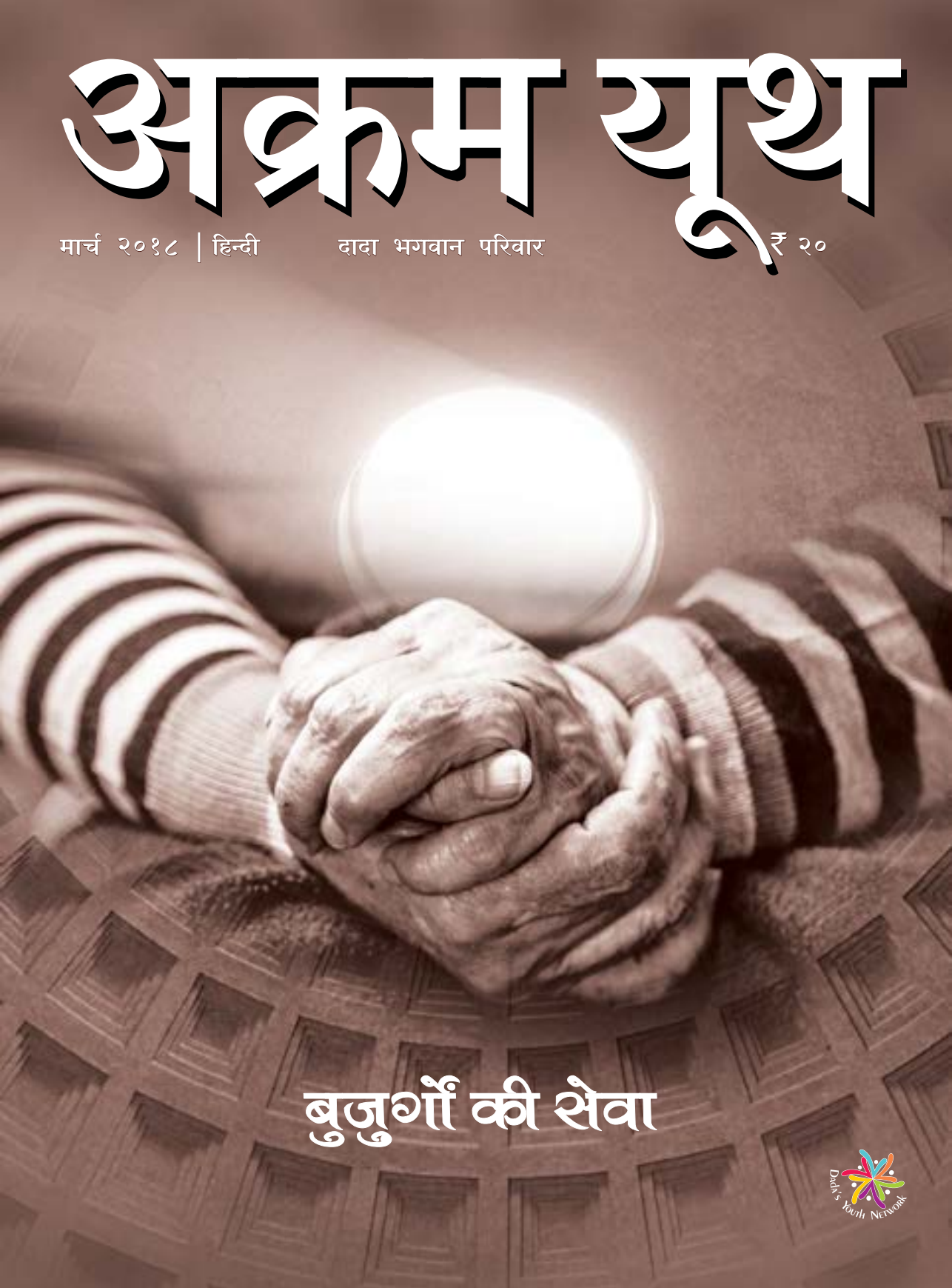

बुजुर्गों की सेवा

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

०४. सर्वे

०६. क्या इसे सच्ची सेवा कह सकते हैं?

०८. ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

०९. अनुभव

१०. Q&A

१२. दादाश्री के पुस्तक की झलक

१४. आई मीस यू, मॉम

१६. धर्म या सेवा?

१८. निरांत (शांति, आराम)

२१. जन्नत अपने माता-पिता के चरणों में...

२२. Word Search

२३. Wisdom Workshop

संपादक:
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५, अंक : ११
अखंड क्रमांक : ५९
मार्च २०१८

संपर्क सूत्र:
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr. RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

संपादकीय

मनुष्य जीवन की सार्थकता किस चीज़ में हैं, क्या हमने कभी ऐसा सोचा है? यश, नाम, कीर्ति, लक्ष्मी कमाने में या फिर और कुछ? अपने अलावा, माता-पिता के प्रति भी हमारा कोई फर्ज़ तो होगा न? माता-पिता, बुजुर्गों का उपकार जीवन में कैसे भूल सकते हैं? उस उपकार का बदला कैसे चुका सकते हैं? हर एक धर्म एक ही बात दोहराता है कि इस उपकार का बदला सिर्फ सेवा धर्म से ही चुका सकते हैं। सही अर्थ में मानवता या मानवधर्म यही है कि सेवा के सिंचन से हमारा जीवन प्रकाशित हो और हमसे औरों को सुख मिले।

पूज्य दादाश्री कहते हैं कि जीवन में यदि सुखी होना चाहते हो तो सुख की दुकान खोलो। माता-पिता, बुजुर्गों को कभी भी भूला नहीं देना चाहिए। इससे भी आगे बढ़कर, प्रेम से, बिना किसी अपेक्षा के सेवा करनी चाहिए। गुरु की, ज्ञानी की सेवा तो शायद सभी को न भी मिले, लेकिन माता-पिता, बुजुर्गों की सेवा तो सभी अवश्य कर ही सकते हैं। माता-पिता, बुजुर्गों की सिर्फ सेवा ही नहीं करनी है बल्कि उनके दिल को ठंडक पहुँचानी है, उन्हें राज़ी करना है। उनके आशीर्वाद से हमारे काम सफल होंगे, हमें आनंद रहेगा और अंदर से शांति रहेगी।

चलो समझें कि इस अंक में माता-पिता और बुजुर्गों के बारे में दादाश्री क्या कहना चाहते हैं।

-डिम्पल मेहता

सर्वे

हमने युवाओं से पूछा कि तुम्हारे लिए "सेवा क्या है ?" यहाँ उनके जवाब हैं।

- ✓ *सेवा अर्थात् विशेषभाव, सामने वाले की आज्ञा में रहना और विनय में रहना।*
- ✓ *सिन्सियर रहकर कार्य करना।*
- ✓ *फल की प्राप्ति के लिए नहीं लेकिन भावना से किया जाने वाला कार्य।*
- ✓ *दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करना यानी सेवा, दूसरों का काम करना यानी सेवा।*
- ✓ *सेवा करने से मुक्त आनंद का अनुभव होता है।बिना किसी अपेक्षा के दूसरों की मदद करना।*
- ✓ *किसी का भला करना और खुश रखना।*

हमने माता-पिता, बुजुर्गों और शिक्षकों से भी पूछा कि आपके मुताबिक "सेवा अर्थात् क्या?" यहाँ उनके जवाब हैं।

- ✓ ***मनुष्य जन्म सफल करने का मार्ग अर्थात् सेवा।***
- ✓ ***बुजुर्गों की सेवा, वह प्रत्यक्ष भगवान की सेवा के समान है।***
- ✓ ***सभी की ज़रूरत होने पर तन-मन और धन से मदद करना।***
- ✓ ***सेवा यानी सिर्फ अपने और अपने परिवार के लिए ही नहीं बल्कि दूसरों का कुछ कल्याण हो इसके लिए प्रयत्न करना।***
- ✓ ***सेवा यानी माता-पिता की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर मददगार होना। जिसे जो चाहिए वह दे देना वह सेवा है।***
- ✓ ***सेवा मतलब बुजुर्गों की मदद करना तद्परांत जगत्कल्याण का काम करना वह।***

हमने फिर से युवाओं से पूछा कि वे माता-पिता की सेवा किस तरह से करना चाहते हैं?

- ✓ *उनके साथ मिल-जुलकर रहना और गुस्सा नहीं करना, उनकी सलाह मानना और दुःख में उन्हें साथ देना।*
- ✓ *चाहे कैसी भी परिस्थिति में माता-पिता के सभी कार्यों में उनका साथ देकर उनकी मदद करना।*
- ✓ *माता-पिता को दुःख नहीं देना।*
- ✓ *उनके द्वारा दिए गए संस्कारों का पालन करके, वे जो भी काम दें, उसे परम विनय से और बिना तिरस्कार किए करना।*
- ✓ *उनकी अपेक्षाओं को पूरा करना और उन्हें अच्छा लगे ऐसा बर्ताव करना। प्रेम से व्यवहार करके अपने कर्तव्यों का पालन करना।*
- ✓ *उनकी सभी बातों को समझकर अमल करना, उनकी सभी आवश्यकताओं को विनय में रहकर पूरा करना।*

हमने फिर से माता-पिता, बुजुर्गों और शिक्षकों से पूछा कि आप लोग युवाओं से किस प्रकार की सेवा की अपेक्षा रखते हैं?

- ✓ *हमारा ख्याल रखना वे अपना फर्ज़ समझें और अच्छे मार्ग पर आगे बढ़ें।*
- ✓ *जब हमारा शरीर साथ न दें, तब हमारी मदद करें।*
- ✓ *हमारे साथ प्रेम से, मिल-जुलकर रहें।*
- ✓ *पवित्रता से सच बोलें और दादा में जुड़ें।*
- ✓ *खुद निर्भर बनें।*
- ✓ *हमारे साथ बहस न करें।*
- ✓ *कुसंग न करे। बूरी आदतों (सिगरेट, तंबाकु इत्यादि) से दूर रहें।*

क्या इसे कहते हैं सच्ची सेवा?

"मम्मी... मुझे खाना दो, कहाँ हो आप?" मौलिक पूरे घर में अपनी मम्मी को ढूँढ रहा है और तभी फोन की घंटी बजती है। "मौलिक, तू सिटी हॉस्पिटल में आ जा, दिवाली की सफाई करते समय तेरी मम्मी को चोट लग गई है।" मौलिक के पापा ने मौलिक से कहा।

"मौलिक चिंतित होकर सिटी हॉस्पिटल पहुँचता है। देखता है कि मम्मी के पैर में फ्रैक्चर है और वे हॉस्पिटल के पलंग में सो रही हैं। दो दिनों के बाद मौलिक और उसके पापा, मम्मी को घर ले आते हैं।

"पापा, मम्मी का पैर कब ठीक होगा?" "बेटा, एक या दो महीने तो लगेंगे ही।" "पापा, हम खाना कहाँ खाएँगे? और घर का काम?" मौलिक के पापा मुस्कुराते हुए कहते हैं, "हम दोनों हैं न? तेरी मम्मी को हम दोनों किसी भी तरह की परेशानी नहीं होने देंगे।"

यह सुनकर मौलिक का चहेरा उतर गया। उसने अपने पापा से कहा, "पापा हम किसी काम वाली को रख

“मम्मी प्लीज़, जब आप बीमार थीं, तब मैंने सारी सेवा की थी न? अब मैं और कितना करूँ?”

लेंगे, मुझ से इतना सारा काम नहीं होगा। मैं कॉलेज जाऊँ या काम करूँ?“ पापा ने कहा, “बेटा, हमें काम वाली की क्या ज़रूरत है?“ लेकिन मौलिक नहीं मान रहा था। फिर उसके पापा ने कहा कि, “मैं तुझे तेरा फेवरिट टैब्लिट दिलवा दूँगा।“ तू छोटे-मोटे काम में मेरी मदद करना। टैब्लिट के लालच की वजह से मौलिक अपनी मम्मी की बहुत सेवा करता है। मम्मी को खाना खिलाता है, घर की साफ-सफाई करता है, आवश्यक चीज़ें ला देता है। मम्मी तो मौलिक की ऐसी सेवा देखकर बहुत खुश हो गई और उन्हें लगा कि मौलिक बहुत समझदार हो गया है। दो महीने बाद मम्मी का प्लास्टर खुल गया और अब वे चल सकती हैं और घर का काम भी कर सकती है।

मम्मी के ठीक हो जाने पर, पापा ने मौलिक को टैब्लिट दिलवा दिया। लेकिन यह क्या? हाथ में टैब्लिट आते ही मौलिक राजकुमार बन गया। उसकी चीज़ें कहीं भी बिखरी रहती। मौलिक समय से घर नहीं आता था, खाना खाने में नाटक करता था। यह देखकर उसकी मम्मी ने उससे कहा, “मौलिक तू भले ही बाहर जा, लेकिन घर समय पर लौट आया कर और मेरी मदद न कर तो कोई बात नहीं, लेकिन अपनी चीज़ें तो जगह पर रख।“

“मम्मी प्लीज़, जब आप बीमार थीं, तब मैंने सारी सेवा की थी न? अब मैं और कितना करूँ?”

दोस्तों, मौलिक की तरह हम भी बुज़ुर्गों की सेवा या लोक कल्याण करते होंगे। क्या यह सही मायने में सेवा है?

चलो, जानें इस विषय पर दादाजी क्या कहते हैं...

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

दादाश्री : लोकसेवा इसलिए करनी है ताकि भगवान मिल सके। लोकसेवा तो हृदय से करनी चाहिए, हृदयपूर्वक होगी तो सब जगह पहुँचेगी। लोकसेवा और ख्याति, अगर दोनों एक साथ हों न तो मनुष्य को मुसीबत में डाल देते हैं। जब लोकसेवा बिना ख्याति के हो, तभी सही कहलाती है। ख्याति तो मिलती ही है, लेकिन ख्याति की इच्छा नहीं रखनी चाहिए।

लोग जनसेवा करें ऐसे हैं नहीं। यह तो अंदर कीर्ति का लोभ है, मान का लोभ है, तरह-तरह के लोभ हैं, वे करवाते हैं। जनसेवा करने वाले व्यक्ति कैसे होते हैं? वे अपरिग्रही पुरुष होतें हैं। ये तो सब नाम कमाने के लिए, "धीरे-धीरे, कभी तो प्रधान बन जाऊँगा," ऐसा करके जनसेवा करते हैं। अंदर नियत अच्छी नहीं रहती, इसलिए बाहर की आफतें, व्यर्थ परिग्रह, ये सब छोड़ दें तो सब ठीक हो जाएगा। यह तो एक तरफ परिग्रही, संपूर्ण परिग्रही रहना है और दूसरी तरफ जनसेवा करनी है, ये दोनों एक साथ कैसे हो सकते हैं?

बाकी, सेवा तो उसे कहते हैं कि तू काम कर रहा हो तो मुझे उसका पता भी नहीं चले इसे सेवा कहते हैं। मूक सेवा होती है। पता चल जाए, उसे सेवा नहीं कहते।

अनुभव

वास्तव में सेवा का मतलब क्या हैं मुझे पता ही नहीं था, लेकिन YMHT में आने पर पूज्यश्री के सत्संग में सुना था कि जब किसी को हमारी ज़रूरत हो, तब हम उनकी मदद करें तो उनके आशीर्वाद से हमारे कार्य में सफलता मिलती है। यह बात मुझे याद रह गई थी। जब में १०वीं कक्षा में थी, तब मेरे पापा की तबियत ठीक नहीं थी, तब मुझे उनकी सेवा करने का मौका मिला था। मैंने दिल से पापा की सेवा की जिसके फलस्वरूप मेरा रिज़ल्ट बहुत अच्छा आया। मैं अपना ध्येय प्राप्त कर सकी। दिल से सेवा करने में वास्तव में बहुत आनंद मिलता है। सामने वाली व्यक्ति के आशीर्वाद मिलते हैं, जिससे हमारे सारे काम आसान हो जाते हैं।

-विशाखा घोड़किया, भावनगर

मेरे पापा को जब रेटिनल डिटेचमेन्ट हो गया था, तब आँख में खून बहने के कारण उन्हें देखने में तकलीफ होती थी। ऑपरेशन करवाने के बाद उन्हें स्कूटर चलाने में तकलीफ होती थी। इसलिए उन्हें जब कभी बाहर जाना हो तो मैं ही ले जाती थी। मेरी परीक्षा के समय भी मैं दिल से उनके साथ जाती थी, फिर भी मेरे मार्कस् कभी कम नहीं आए और अंतिम वर्ष में ७८ प्रतिशत आए। यह उनके आशीर्वाद से ही संभव हो पाया है। दादा का ज्ञान मेरे लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ है। भाव बिगाड़े बगैर दिल से माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। उनके आशीर्वाद तो सदैव हमारे साथ ही हैं।

- खुशाली जानी, भावनगर

प्रश्नकर्ता : *माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा का क्या महत्व है?*

आप्तपुत्री : *माता-पिता की जो शुद्ध सेवा करते हैं, उन्हें कभी अशांति नहीं रहती, ऐसा यह जगत् है। माता-पिता की सेवा करने से पूरी ज़िंदगी दुःख नहीं आता, परेशानियाँ नहीं रहती और ज़िंदगी में धन का दुःख भी नहीं रहता। बुजुर्गों की सेवा करने से हमारा विज्ञान खील उठता है।*

प्रश्नकर्ता : *कई बार ऐसा होता है कि हमारी पढ़ाई या रूटिन काम में व्यस्त होने के कारण हम मम्मी-पापा का ख्याल नहीं रख पाते, तो उस समय अंदर कैसा रखना चाहिए?*

आप्तपुत्री : *हमें इतना ध्यान रखना चाहिए कि हम उनकी उपेक्षा न करें। उन्हें थोड़ा समय देकर, उनके साथ बातचीत करनी चाहिए। हमारे अंदर अगर ऐसी समझ होगी न तो इतने से ही उन्हें शांति लगेगी। उन्हें पता ही है कि आपकी पढ़ाई ज्यादा है, लेकिन कई बार आपका ऐटिट्यूड ऐसा रहता है कि, "आपका कितना काम करें और कितना ध्यान रखें।" इससे उन्हें प्रॉब्लम होती है। आप उन्हें शांति से समझाकर कहना।*

प्रश्नकर्ता : *हमें सेवा करते समय मन में कई बार ऐसे विचार आते हैं कि, कहाँ इनकी सेवा करनी पड़ रही हैं? ऐसा हो तब मुझे क्या करना चाहिए?*

आप्तपुत्री : *हमें ऐसा सोचना चाहिए कि उन्होंने कितने भाव से हमें बड़ा किया है। हम पर उनके कितने उपकार हैं। हमें कितने दिल से सँभालते हैं। उन्हें हमसे अपेक्षा रहती है कि जब वे बीमार हों, तब उनके बेटे-बेटियाँ उनकी सेवा करें।*

माता-पिता की सेवा तो हमें भाव बिगाड़े बगैर करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : *आज-कल के बच्चे माता-पिता की सेवा नहीं करते, तो उनकी गति कैसी होगी या इसका परिणाम कैसा क्या आएगा?*

आप्तपुत्री : *जो लोग माता-पिता की सेवा नहीं करते, वे लोग अधोगति की ओर जाते हैं। जो लोग अपने माता-पिता की सेवा नहीं करते, उनका देखकर उनके बच्चे भी उनकी सेवा नहीं करेंगे। माता-पिता की सेवा करना तो आवश्यक है।*

आपकी मनपसंद मैगज़ीन अब से हर
महीने हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है।

अक्रम यूथ

अब से आप youth.dadabhagwan.org और Dada Bhagwan App पर
से भी अक्रम यूथ की हिन्दी आवृत्ति ले सकते हैं...

दादाश्री की

पुस्तक की झलक

संसार में सुख प्राप्त कर सकते हैं सेवा से।

दादाश्री : *जो व्यक्ति माता-पिता के दोष देखता है, उसमें कभी भी बरकत ही नहीं आती। शायद वह पैसे वाला बन जाए, लेकिन उसकी आध्यात्मिक उन्नति कभी नहीं होती है। माता-पिता के दोष नहीं देखने चाहिए। उपकार कैसे भूल सकते हैं? किसी ने चाय पिलाई हो, तो भी उपकार नहीं भूलते हैं तो हम माता-पिता का उपकार कैसे भूल सकते हैं?*

तू समझ गया? हं... इसलिए बहुत उपकार मानना चाहिए। बहुत सेवा करनी चाहिए। फादर-मदर की बहुत सेवा करनी चाहिए। वे अगर उल्टा कह दें, तो हमें क्या करना है? वे उलटा कहें तो इग्नोर करना है, क्योंकि बड़े हैं न? कि तुझे उल्टा बोलना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : *नहीं बोलना चाहिए। लेकिन बोल देते हैं उसका क्या? मिस्टेक हो जाए तो क्या करें?*

दादाश्री : *हाँ, क्यों फिसल नहीं जाता? वहाँ तो सावधान रहता है और अगर फिसल गया तो फादर भी समझ जाएँगे कि बेचारा फिसल गया। यह तो तू जान-बूझकर ऐसा करने जाए, तो, "यहाँ क्यों फिसल गया?" इसका मैं जवाब मांगता हूँ, सही-गलत? इसलिए एज़ फॉर एज़ पॉसिबल, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए,*

बुज़ुर्गों की सेवा करने से अपना विज्ञान खिलता है। क्या मूर्तियों की सेवा हो सकती हैं? मूर्तियों के क्या पैर दुखते हैं? सेवा तो अभिभावक माता-पिता, बुज़ुर्गों या गुरु हो उनकी करनी चाहिए।

फिर भी अगर तुझ से तेरी सामर्थ्य से बाहर हो गया तो ये सब समझ जाएँगे, कि यह ऐसा कर नहीं सकता।

उन्हें खुश रखना चाहिए। वे तुझे खुश रखने की कोशिश करते हैं या नहीं? तुझे सुखी रखने की इच्छा होगी या नहीं उन्हें?

दादाश्री : *बाज़ार में दूसरी माँ नहीं मिलती, है न? और मिले तो भी किस काम की? गोरी पसंद हो, तो भी हमारे किस काम की? अभी जो है, वही अच्छी हैं। दूसरों की गोरी देखकर, "हमारी खराब है," ऐसा नहीं कहना चाहिए। "मेरी माँ तो बहुत अच्छी है, ऐसा कहना चाहिए।"*

बुज़ुर्गों की सेवा करने से अपना विज्ञान खिलता है। क्या मूर्तियों की सेवा हो सकती हैं? मूर्तियों के क्या पैर दुखते हैं? सेवा तो अभिभावक माता-पिता, बुज़ुर्गों या गुरु हो उनकी करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : *यह भाई पूछ रहे हैं कि क्या पापा की बात माननी चाहिए?*

दादाश्री : *पापा की? वे जिसमें खुश रहें ऐसा रखना। उन्हें खुश रखना नहीं आता? वे खुश रहें ऐसा करना।*

To : ***जगत् के सारे युवा***
Subject : ***आई मीस यू, मोम,***
From : ***मार्क मेरो, मोटिवेशनल स्पीकर,***

मेरी मम्मी मेरे प्रत्येक खेल में हाज़िर रहती थी। उदाहरण के तौर पर, मैं फूटबॉल खेल रहा होऊँ, तो मेरा उत्साह बढ़ाने के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती और मुझे लगता "हे भगवान"...। मेरे साथ वाले लोग भी ताना देते हुए पूछते "ये कौन हैं? तेरी मम्मी?" मैं कहता, "नहीं, मैं उन्हें नहीं पहचानता। पहले कभी उन्हें देखा नहीं है।"

"लेकिन, मैं सच कहता हूँ, मम्मी ने अगर मुझे कोई अच्छी गिफ्ट दी है, तो वह है उनका मुझ पर विश्वास। मैं ज़रूरत से ज्यादा ड्रग्स लेता था। तीन बार तो ऐसी हालत हो गई थी कि मैं मरने ही वाला था। मुझे लगता है कि अगर मैं जीवित हूँ तो सिर्फ इसी कारण से कि मेरी मम्मी ने मुझे जीवन में आए हुए भयंकर दुःखों से बचा लिया। इसका मुख्य कारण था उनका मुझ में संपूर्ण विश्वास। वे कहती थीं, "आप मुझे अपने दोस्त से मिलवाओ, मैं आपको आपका भविष्य बताऊँगी।" मुझे यह कैसे पता चला? क्योंकि, मैं ऐसे दोस्तों के साथ घूमता था और वह मेरी सब से बड़ी गलती थी। मैं कुसंग में था।?"

रात के दो-तीन या चार बजे मेरे दोस्त मुझे घर पर छोड़ने आते थे। हम शराब पीकर गाड़ी चलाकर घर आते। कार में मस्ती भी करते थे। जब मेरे दोस्त घर पर छोड़ने आते, तब घर की ओर देखकर मुझे कहते, "मार्क, देख तेरे घर की लाइट जल रही है। तेरी मम्मी राह देख रही है" और मुझे लगता, "अरे यार!" मेरी मम्मी तब तक नहीं सोएगी जब तक वह मुझे घर पर नहीं देख लेती। घर में जाते ही मुझे पूछती, "हाय मार्क, तेरा दिन कैसा गया?" मैं जवाब देने कि खातिर कहता "अच्छा।" मम्मी रिकवेस्ट करती कि, "मैं थोड़ी देर तुझ से बातें करूँ?" बात को टालने के लिए मैं कहता, "मैं बहुत थक गया हूँ अभी नहीं।" मार्क, मैंने तुझे पूरे दिन और पूरी रात नहीं देखा। क्या मैं तेरे साथ बातें भी नहीं कर सकती? मम्मी इस प्रकार गिड़गिड़ाती "अरे यार!

तू मुझे अकेला छोड़ दे।" ऐसा कहकर मैं ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर देता।

ऐसा चलता रहता, फिर भी उन्होंने मुझे ड्रग्स के

ओवर डोज़ से बाहर निकाला।

मेरे करिअर के दौरान जब मैं दुनिया की सफर पर था, तब एक दिन जापान में मेरी कुस्ती की मेच के बाद, मैं होटल के रुम में आराम कर रहा था, तब अचानक बेल बजी। मैंने देखा, रात के तीन बजे थे। मैंने दरवाज़ा खोल कर देखा, तो मेरे जापानीज स्पोन्सर थे। उन्होंने कहा, "मार्क, तुम्हारे घर से इमरजन्सी फोन है।" मैं तुरंत ही नीचे होटल के रिसेप्शन पर गया। फोन उठाया तो सामने से आवाज़ आई- मार्क? ऐसा लगा कि वह आदमी कुछ कहने से झिझक रहा था। "मार्क, मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं तुमसे कैसे कहूँ लेकिन मार्क, तुम्हारी मम्मी अब इस दुनिया में नहीं हैं।" यह सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। फोन रखकर मैं होटल रुम से निकलकर बाहर रास्ते पर दौड़ने लगा। जापान के हिरोशीमा की गलियों में दौड़ने लगा। रात को रास्ता सुनसान था। मन में एक वेदना उठी। मैं मम्मी से इतना ही कहना चाहता था, "मम्मी, आई एम सॉरी।" मैं एक अच्छा बेटा नहीं बन पाया।"

मैं मम्मी की अंतिम क्रिया के लिए गया। उन्हें देखते ही रो पड़ा। बस, एक ही इच्छा थी कि, मम्मी उठ जाओ। उन्हें कोफीन में सोया हुआ देखकर, मुझे एहसास हुआ कि, "मेरी मम्मी कितनी सुंदर और प्यारी लग रही हैं।" वे परी जैसी लग रही थीं। मुझे बहुत पश्चाताप हुआ और दुःख हुआ कि मैंने उनकी कदर नहीं की। मैंने कहा, "हे मम्मी, आप मेरी आदर्श हैं। आपने मुझे ड्रग्स वगैरह जैसे कुसंग से बचाया।"

मैं समझ गया कि राह से भटकने के लिए हमारे पास कई विकल्प रहते हैं। आप अगर कुसंग वाले दोस्तों से घिरे रहोगे, तो गए काम से। वे आपका काम तमाम कर देंगे। आज मुझे सफलता मिली, शादी की, फैमिली बनाया, पैसे कमाया, लेकिन अब पता चला कि जीवन कितना अमूल्य हैं।"

आपकी जेब में क्या है उसका महत्व नहीं है बल्कि आपके दिल में क्या है उसका महत्व है। जब तक "प्रेम" का अर्थ पूर्णतः न समझ लें, तब तक वह सिर्फ एक शब्द ही है। मम्मी-पापा के लिए उस प्रेम शब्द का अर्थ हम है।

मेरी मम्मी मुझ से बस थोड़ा सा समय ही तो चाहती थीं। मैं तो पछता रहा हूँ, लेकिन आप इस मैगेज़ीन को छोड़कर पहले अपने मम्मी-पापा से मिलो, उन्हें "थेंक-यू" कहो,

और उनके साथ समय बीताओ।

आपका, मार्क मेरो

धर्म या सेवा??

विठोबा, भगवान विष्णु के अवतार हैं। जो नारायण, पंत या हरी के नाम से भी पहचाने जाते हैं।

लगभग पाँचवी या छट्ठी सदी में दाँतीवाड़ा के जंगल में एक विष्णु भक्त अपने माता-पिता के साथ रहता था। उसका नाम पुंडरिक था। जब से उसकी शादी हुई, तब से वह अपने माता-पिता का अनादर करने लगा। अपने बेटे के व्यवहार से दुःखी होकर, उसके माता-पिता ने काशी की यात्रा पर जाना तय किया। पुंडरिक और उसकी पत्नी ने भी साथ में जाना तय किया। उसके माता-पिता पैदल यात्रा करते, जबकि पुंडरिक और उसकी पत्नी दोनों ने घुड़सवारी करके यात्रा की। इतना ही नहीं, विश्राम के समय पुंडरिक अपने माता-पिता से काम करवाता।

यात्रा से लौटते समय एक बार उन्होंने एक आश्रम में विश्राम किया। वहाँ रात में पुंडरिक ने कुछ सुंदर स्त्रियों को देखा, जो आश्रम में कपड़े धोने आई थीं। उन स्त्रियों ने आश्रम साफ किया, साधुओं के कपड़े धोए और थोड़ी ही देर में चमत्कारिक तरीके से वहाँ से अदृश्य हो गई! परेशान और मोहित हो चुके पुंडरिक दूसरे दिन उन स्त्रियों को देखते ही उनके पास गया और पूछा कि, "आप कौन हैं?" उन स्त्रियों ने कहा कि वे गंगा और यमुना नदी की देवियाँ हैं। पुंडरिक ने आशीर्वाद माँगते हुए कहा, "मेरी तो यात्रा सफल हो गई।" देवियोंने आशीर्वाद देने के बजाय कहा, "पुंडरिक, तेरी यह यात्रा निष्फल हो गई।" पुंडरिक तू महापापी है, क्योंकि तूने अपने माता-पिता की उपेक्षा की है, उन्हें दु:ख दिया और इस उम्र में उनकी सेवा करने के बजाय काम करवाया। "तेरा यह पाप हम भी नहीं धो पाएँगे।" यह सुनकर पुंडरिक रो पड़ा। उसी क्षण उसने निश्चय किया, "जीवन के अंतिम श्वास तक मैं माता-पिता की सेवा करूँगा।" उसने माता-पिता की देखभाल करना शुरू कर दिया।

पुंडरिक की ऐसी सेवा की बातें देव लोक में भी होने लगी। पुंडरिक की सेवा से प्रसन्न होकर, भगवान विष्णु स्वयं, उसे दर्शन देने के लिए पृथ्वी पर पधारे। रूप बदलकर पुंडरिक के घर पर पहुँचे। पुंडरिक ने उन्हें पहचान लिया, लेकिन माता-पिता की सेवा में व्यस्त होने के कारण उस समय वह ऐसी स्थिति में नहीं था कि पुंडरिक भगवान का स्वागत कर सके। इसलिए पास में ही पड़ी हुई एक इंट को फेंककर, भगवान को उस पर बैठकर राह देखने के लिए कहा। भगवान खड़े रहे। फिर सेवा से निवृत होकर उसने भगवान के पैर छूए और उन्हें पृथ्वी पर रहने की विनती की। पुंडरिक की इच्छानुसार भगवान वहीं बस गए। भगवान विष्णु इंट पर खड़े थे, इसलिए उन्हें विठोबा कहते हैं।

"धर्म तो उसे कहते हैं कि माता-पिता को बुलाए, भाई को बुलाए, सभी को बुलाए। जिस व्यवहार से अपने धर्म का तिरस्कार करे, माता-पिता का तिरस्कार करे, उसे धर्म कैसे कहेंगे? माता-पिता की सेवा करना, यह धर्म है। और हम जितना धर्म का पालन करेंगे हममें उतना सुख उत्पन्न होगा। "माता-पिता को सुख देंगे तो हमें भी सुख मिलेगा।"

नीरू माँ का मेसेज, निरांत के भूमिपूजन के समय

हमने अडालज में एक नया प्रोजेक्ट शुरू किया है। "निरांत।" जब वृद्ध लोग जो घर में बेटे-बहुओं के साथ न रह सकते हैं, न ही सह सकते हैं, न ही जी सकते हैं, ऐसे संयोगों में। सब कुछ होने के बावजूद भी भयंकर दुःख में, भोगवटा में रहकर अपना मोक्ष तो क्या लेकिन मौत भी बिगाड़ दे, ऐसी परिस्थिति में रहते हैं। उससे छूटने के लिए और त्रिमंदिर के सानिध्य में भगवान की भक्ति करते-करते, दादा का ज्ञान प्राप्त करके छूटने के लिए यह दादा की इच्छानुसार प्रोजेक्ट किया है। सभी महात्मा स्वयं वॉलन्टिअर्स (सेवक) बनकर रहने, खाने, पीने की सेवा देंगे और वहाँ पास में ही अस्पताल है, जिसमें २४ घंटे डॉक्टर रहेंगे, साथ ही योगा, कसरत, फिजियोथेरपी सब कुछ रोज़ सभी को मिलता रहेगा। हररोज़ मंदिर में सुबह-शाम आरती में आने-जाने की सारी सुविधाएँ होगी, बाहर घूमने ले जाएँगे। यह दादा की बात थी। दादा के शब्दों में ही यहाँ दिया है, "इस काल में वास्तव में करने जैसा क्या है, तो ऐसे बुजुर्गों के लिए कहीं पर रहने का स्थान हो तो बहुत अच्छा" इसलिए हमने सोचा था। मैंने कहा, ऐसा कुछ करना हो न तो पहले यह ज्ञान देकर, ज्ञान से उन्हें

साहजिक बनाया जाए ताकि शांति में रह सकें, वर्ना किस आधार पर शांति रहेगी? वृद्धाश्रम के बारे में हमने बहुत सोचा। घर में ६५ साल के बुजुर्ग हों, कोई उनकी सुनता न हो, तो उन्हें कैसा लगेगा? मुँह पर कह नहीं सकते और अंदर उल्टा कर्म बाँधेगे, इसलिए लोगों ने वृद्धाश्रम बनाए हैं। वह गलत नहीं है, सहायक है, लेकिन उसे वृद्धाश्रम बनाए हैं। वह गलत नहीं है, सहायक है, लेकिन उसे वृद्धाश्रम के तौर पर नहीं बल्कि कुछ नया नाम देना चाहिए। ऐसे शब्द रखने चाहिए कि सम्मान लगे। इसलिए हमने नाम दिया, "निरांत" (आराम) सब तरह से निरांत।

अनुभव निरांत में रहने वाले महात्माओं के

हमें तो यह "निरांत" नाम बहुत ही योग्य लगता है। हमेशा ऐसा ही लगता है कि "निरांत" हमारा अपना ही घर है। हमें खाने-पीने की कोई समस्या नहीं है और तबियत का ध्यान रखने के लिए दो बहनें हैं। किसी को अगर चलने में तकलीफ हो या किसी की ज़रूरत हो तो उनके लिए अलग से केयरटेकर की व्यवस्था भी है।

यह अन्य वृद्धाश्रम की तरह नहीं है, अलग है। कैसे? एक दिन मैंने निरांत में ही रहने वाले अपने एक दोस्त से पूछा, "आज पूरा दिन क्या करोगे?" तो वह कहने लगे, थाली और चम्मच बजाएँगे। अन्य वृद्धाश्रमों में पोलिटिक्स या नेगेटिव बातें चलती रहती है, लेकिन निरांत का वातावरण बिल्कुल अलग है। वृद्धावस्था में कोई बात सुनने या पास बैठने के लिए तैयार नहीं होते। शरीर का हर एक अंग दुःख देता है। चलने की, बोलने की शक्ति खत्म हो जाती है। बड़ी उम्र में हाथ उठाने, चलने के लिए भी मदद चाहिए। सारे जोड़ दर्द करते हैं और किसी से कुछ कह भी नहीं सकते।

जीवन के इस दर्दनाक दशा में हमें "निरांत" मिला है, जहाँ दादा के ज्ञान के साथ हमारी शारीरिक तकलीफों और जरूरतों पर ध्यान दिया जाता है। पूरे दिन सत्संग करते हैं। अस्पताल जाने के लिए गाड़ी आ जाती है और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग कराने योगा टीचर आती हैं। हमें हमेशा शांति का अनुभव होता रहता है। ऐसा वातावरण और कहीं भी नहीं मिलेगा, ऐसा हमें लगता है। बहुत सुंदर और शांत। हमें जैसा चाहिए वैसा ही है यह "निरांत।"

जन्नत

आपके माता-पिता के चरणों में

इस्लाम धर्म में कभी भी वृद्धाश्रम नहीं होते। वे कैसी भी परिस्थिति में माता-पिता की सेवा करते हैं। इसके बारे में इस्लाम धर्म में एक कथा है।

हजरत मुसा, अल्लाह के दूत (पैगम्बर) थे। एक दिन उन्हें ऐसा विचार आया कि, "जन्नत में मेरी पड़ोस में कौन होगा?" जब वे बंदगी करने (नमाज़ में) बैठे थे, तब उन्हें आवाज़ सुनाई दी, "हजरत, सुनो। जन्नत में तुम्हारी पड़ोस में अली होगा।" यह सुनकर हजरत मुसा को आश्चर्य हुआ। वे अली को पहचानते थे। वह बहुत गरीब था। उनके घर से थोड़ी ही दूरी पर अली रहता था। नमाज़ पूरी करके उन्होंने अली के घर जाने का तय किया। अली के घर पहुँचकर उन्होंने एक दृश्य देखा। बिस्तर में पड़े वृद्ध माता के पास अली बैठा है और उनके सिर पर हाथ फेर रहा है। पास में ही एक दूध से भरी हुई कटोरी रखी है। उसमें रूई भीगोकर अपनी माता को दूध पीला रहा है। क्योंकि उसकी माँ इतनी बीमार थीं कि चम्मच से दूध नहीं पी सक रही थीं। इस प्रकार धीरे-धीरे पूरी कटोरी दूध पीला दिया। अली का सेवा भाव और धीरज देखकर हजरत रो पड़े। ऐसी अद्‌भुत सेवा से खुश होकर अली की माता आशीर्वाद देते हुए कहती हैं कि, "अली बेटा, तूने मेरी दिल से सेवा की है। जा अली, मैं तुझे आशीर्वाद देती हूँ कि जन्नत में तेरी पड़ोस मे हजरत मुसा होंगे।"

यह सुनकर हजरत मुसा समझ जाते हैं कि माता-पिता की सेवा का फल क्या मिलता है। इसलिए इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए कुरान में कहा गया है कि, "जन्नत आपके माता-पिता के चरणों में है।"

Word Search

हमें आशा है कि आपने यह अंक पढ़ा और समझा होगा। तो चलो देखते हैं...

नीचे दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए और उस शब्द को चोकोर बोक्स में ढूँढिए।

१) बुजुर्गों की सेवा यानी जीवित .... की सेवा।

२) जब हमारी जरूरत हो, तब हम उनकी .... मदद करें तो उनके .... हमें मिलते हैं

३) माता-पिता की सेवा हमें .... बिगाड़े बिना करनी चाहिए।

४) बुजुर्गों की सेवा करने से हमारा .... खीलता है।

५) माता-पिता की सेवा करना .... है।

६) .... आपके माता-पिता के चरणों में है।

७) "..........." का अर्थ पूर्णतः समझ न लें तब तक वह सिर्फ एक शब्द ही है।

८) अडालज में ज्ञान लिए हुए वृद्ध महात्माओं के रहने की जगह यानी..........

९) माता-पिता की शुद्ध सेवा करे न उसे .... नहीं होगा ऐसा यह जगत् है।

१०) सेवा तो उसे कहते हैं कि तू काम कर रहा है, उसका मुझे पता भी न चले उसे .... कहते हैं।

भ	ग	वा	न	माँ	बा	प	वि	ज्ञा	न
क	प्रे	म	शां	नि	फ	ध	र्म	दि	मो
टा	त	म	ति	लु	रां	र	ऋ	ल	टी
ऊँ	इ	ज	न्न	त	म	त	जी	थी	से
ओ	आ	म	ग	न	टू	ज	भा	या	वा
आ	शी	र्वा	द	म	र	स	व	कु	त
स	म	मूँ	गी	से	वा	न	अ	शां	ति

जवाब :१) भगवान २) दिल से, आशीर्वाद, ३) भाव ४) विज्ञान, ५) धर्म, ६) जन्नत ७) प्रेम ८) निरांत ९) अशांति १०) मूक सेवा

WISDOM Workshop for students

વિદ્યાર્થીઓ માટે સાચી સમજણ

अलग-अगल २० शहरों में Wisdom workshop *आयोजित किए गए। लगभग १८०० युवाओं ने इसमें हिस्सा लिया था।*

For photos and videos of the workshops,

visit http://Youth.dadabhagwan.org/blog

Ifr you want to register for a workshop or conduct a workshop for your friends, school, etc...

visit: www.lspredhsppiness.com

वर्ष : ५, अंक : ११
अखंड क्रमांक : ५९
मार्च २०१८
अक्रम यूथ

दोस्तों, कहते हैं न कि

"हर बात को तुम भूलो भले, माँ-बाप को मत भूलना।

उपकार इनके लाखों है, इस बात को मत भूलना।"

माता-पिता के उपकार चूका नहीं सकते, लेकिन हम एक काम तो कर ही सकते हैं। दिन में एक बार अपने माता-पिता के पैर छूएँ, और हम पर उनका जो उपकार है उसका दिल से धन्यवाद करें.... और हाँ, आपका यह अनुभव हमारे साथ बाँटना मत भूलना।

E-mail: - akramyouth@gmail.com
Facebook: - http://facebook.com/akramyouth.mag
Twitter: - @AkramYouth

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.